15

श्रीललितासहस्रनामस्तोत्र-IV

प्रिय शिक्षार्थी, पिछले पाठ में आपने देवी ललिता के 1000 नामों में से कुछ नामों के विषय में जाना। इस पाठ में उनके अन्य नामों के विषय में जानेंगे।

उद्देश्य

यह पाठ पढ़ने के बाद आप सक्षम होंगे:

- सूक्त में दिये श्लोकों का शुद्ध उच्चारण कर पाने में;
- देवी ललिता की विशेषताएं बता पाने में; और
- उनके नामों का अर्थज्ञान कर पाने में ।

15.1 श्रीललितासहस्रनामस्तोत्र (76-87)

क्षेत्रस्वरूपा क्षेत्रेशी क्षेत्र–क्षेत्रज्ञ–पालिनी ।

क्षयवृद्धि–विनिर्मुक्ता क्षेत्रपाल–समर्चिता ।। ७६ ।।

341) क्षेत्रस्वरूपा – वह जो क्षात्र या शरीर की पहचान हो

342) क्षेत्रेशी – वह जो देह की देवी है

343) क्षेत्रक्षेत्रज्ञपालिनी – वह जो देह और उनके स्वामी को देखता है

344) क्षयवृद्धिविनिर्मुक्ता – वह जो न तो घटती है और न ही बढ़ती है

345) क्षेत्रपालसमर्चिता– वह जो शरीर की देखभाल करते हैं, उनकी पूजा की जाती है

विजया विमला वन्द्या वन्दारु–जन–वत्सला ।

वाग्वादिनी वामकेशी वह्निमण्डल–वासिनी ।। ७७ ।।

346) विजया – वह जो सदा विजयी रहे

347) विमला – वह जो अज्ञान और भ्रम से रहित है

348) वन्द्या – वह जो हर शरीर द्वारा पूजित है

349) वन्दारुजनवत्सला – ववह जो उन सभी के प्रति स्नेह रखता है जो उसकी पूजा करते हैं

टिप्पणी

350) वाग्वादिनी – वह जो तर्कों में बहुत प्रभाव के साथ शब्दों का उपयोग करता है

351) वामकेशी – वह जिसके सुंदर बाल हों

352) वह्निमण्डलवासिनी – वह आग के ब्रह्मांड में रहता है जो मूलाधार है

भक्तिमत्–कल्पलतिका पशुपाश–विमोचिनी ।

संहृताशेष–पाखण्डा सदाचार–प्रवर्तिका ।। ७८।।

353) भक्तिमत्कल्पतिका – वह जो कल्पवृक्ष देने की इच्छा रखता है

354) पशुपाशविमोचिनी – वह जो झोंपड़ियों को जीवित करता है

355) संहृताशेषपाखण्डा – वह उन लोगों को नष्ट कर देता है, जिन्होंने अपना विश्वास छोड़ दिया है

356) सदाचारप्रवर्तिका – वह जो अच्छा काम करता है, अच्छे आचरण से होता है

तापत्रयाग्नि–सन्तप्त–समाह्लादन–चन्द्रिका ।

तरुणी तापसाराध्या तनुमध्या तमोऽपहा ।। ७९।।

357) तापत्रयाग्निसन्तप्तसमाह्लादनचन्द्रिका – वह जो तीन प्रकार के कष्टों से पीड़ित चंद्रमा को सुख देने वाला है

358) तरुणी – वह जो कभी जवान हो

359) तापसाराध्या – वह जो ऋषियों द्वारा पूजा की जा रही है

360) तनुमध्या – वह जिसके पास एक संकीर्ण मध्य (कूल्हा) है

361) तमोऽपहा – वह जो अंधेरे को नष्ट कर देता है

चितिस्तत्पद–लक्ष्यार्था चिदेकरस–रूपिणी ।

स्वात्मानन्द–लवीभूत–ब्रह्माद्यानन्द–सन्ततिः ।। ८०।।

362) चित् (चितिरू) – वह जो बुद्धि का व्यक्ति है

363) तत्पदलक्ष्यार्था – वह शब्द "थाह" का सांकेतिक अर्थ है जो वैदिक का पहला शब्द है जो कहता है कि "तुम कला"

364) चिडेकरसरूपिणी – वह जो ज्ञान के माध्यम से बाहर है

365) स्वात्मानन्दलवीभूतब्रह्माद्यानन्दसन्ततिः – वह जो ज्ञान के सागर में है, वह ब्रह्म के बारे में ज्ञान को एक लहर की तरह बनाता है

परा प्रत्यक्चितीरूपा पश्यन्ती परदेवता ।

मध्यमा वैखरीरूपा भक्त–मानस–हंसिका ।। ८१।।

366) परा – वह जो हर बात का बाहरी अर्थ है

टिप्पणी

367) प्रत्यक्चित्तरूपा –वह जो हमें अंदर ज्ञान की तलाश करता है

368) पश्यन्ति – वह जो अपने भीतर सब कुछ देखती है

369) परदेवता – वह जो सभी देवताओं को शक्ति देता है

370) मध्यमा – वह जो सब कुछ बीच में है

371) वैखरीरूपा – वह जो शब्दों के साथ रूप का हो

372) भक्तमानसहंसिका – वह झील में एक हंस की तरह है जिसे मन कहा जाता है

कामेश्वर–प्राणनाडी कृतज्ञा कामपूजिता ।

शृङ्गार–रस–सम्पूर्णा जया जालन्धर–स्थिता ।। ८२।।

373) कामेश्वरप्राणनाडी – वह कामेश्वर का जीवन स्रोत है

374) कृतज्ञा – वह जो हर एक के सभी कार्यों को देखता है या वह जो सभी को जानता है

375) कामपूजिता – वह जो मूलाधार चक्र–काम के काम गिरी पीता में प्रेम के देवता के रूप में पूजे जा रहे हैं।

376) शृङ्गारससम्पूर्णा – वह प्यारी है

377) जया – वह जो विजय का अधिकारी है

378) जालन्धरस्थिता – वह जो जलंधर पीठ पर है या वह जो शुद्धतम है

ओड्याणपीठ–निलया बिन्दु–मण्डलवासिनी ।

रहोयाग–क्रमाराध्या रहस्तर्पण–तर्पिता ।। ८३।।

379) ओड्याणपीठनिलया – वह ओडियाना पीठ पर है या वह जो आदेशों में रहती है

380) बिंदुमण्डलवासिनी – वह जो श्रीचक्र के केंद्र में स्थित है

381) रहोयागक्रमाराध्या – वह जो गुप्त यज्ञ संस्कार द्वारा पूजा जा सकता है

382) रहस्तर्पणतर्पिता – वह जो इसका अर्थ जानकर मंत्रों से प्रसन्न होता है

सद्यःप्रसादिनी विश्व–साक्षिणी साक्षिवर्जिता ।

षडङ्गदेवता–युक्ता षाड्गुण्य–परिपूरिता ।। ८४।।

383) सद्यःप्रसादिनी – वह जो तुरंत प्रसन्न हो जाती है

384) विश्वसाक्षिणी – वह जो ब्रह्मांड के लिए गवाह है

385) साक्षिवर्जिता – वह जो खुद के लिए गवाह नहीं है

386) षडङ्गदेवतायुक्ता – वह जो भगवान के रूप में उसके छः भाग हैं– दिल, सिर, बाल, लड़ाई की पोशाक, आँखें और तीर

387) षाड्गुण्यपरिपूरिता –वह जो छः विशेषताओं से परिपूर्ण है– धन, कर्तव्य, प्रसिद्धि, ज्ञान, संपत्ति और त्याग

नित्यक्लिन्ना निरुपमा निर्वाण–सुख–दायिनी ।

नित्या–षोडशिका–रूपा श्रीकण्ठार्ध–शरीरिणी ।। ८५ ।।

388) नित्यक्लिन्ना – वह जिसके दिल में हमेशा दया है

389) निरूपमा – वह जो अतुलनीय हैवह जिसके पास तुलना करने के लिए कुछ भी नहीं है

390) निर्वाणसुखदायिनी – वह जो मोचन देता है

391) नित्याषोडशिकारूपा – वह जो सोलह देवियाँ हैं

392) श्रीकाण्ठार्धशरीरिणी – वह जो भगवान शिव के आधे शरीर पर कब्जा करता है

प्रभावती प्रभारूपा प्रसिद्धा परमेश्वरी ।

मूलप्रकृर्ति अव्यक्ता व्यक्ताव्यक्त–स्वरूपिणी ।। ८६ ।।

393) प्रभावती – वह जो अलौकिक शक्तियों से युक्त है

394) प्रभारूपा – वह जो प्राकृतिक प्राकृतिक शक्तियों द्वारा प्रदत्त प्रकाश का व्यक्तिकरण है

395) प्रसिद्धा – वह जो प्रसिद्ध है

396) परमेश्वरी – वह जो परम देवी हैं

397) मूलप्रकृर्ति – वह जो मूल कारण है

398) अव्यक्ता – वह जो स्पष्ट रूप से नहीं देखा जाता है

399) व्यक्ताव्यक्तस्वरुपिणी – वह जो दिखाई और दिखाई नहीं दे रहा है

व्यापिनी विविधाकारा विद्याविद्या–स्वरूपिणी ।

महाकामेश–नयन–कुमुदाह्लाद–कौमुदी ।। ८७।।

400) व्यापिनी – वह जो हर जगह फैला हुआ है

401) विविधाकारा – वह जिसके कई अलग–अलग रूप हैं

402) विद्याविद्यास्वरूपिणी – वह जो ज्ञान के साथ–साथ अज्ञान है

403) महाकामेशनयनकुमुदह्लादकौमुदी – वह पूर्णिमा की तरह है जो भगवान कामेश्वर की आँखों की तरह कमल खोलता है

भक्त–हार्द–तमोभेद–भानुमद्भानु–सन्ततिः ।

शिवदूती शिवाराध्या शिवमूर्तिः शिवङ्करी ।। ८८।।

404) भक्तहार्दतमोभेदभानुमद्भानुसन्ततिः – वह जो सूर्य की किरणों की तरह है जो भक्तों के दिल से अंधेरे को दूर करता है

टिप्पणी

405) शिवदूती – वह जिसने शिव को अपना प्रतिनिधि बनाया

406) शिवाराध्या – वह जो भगवान शिव की पूजा करता है

15.2 श्रीललितासहस्रनामस्तोत्र (88-100)

408) शिवङ्करी – वह जो होने के लिए अच्छा बनाता है

शिवप्रिया शिवपरा शिष्टेष्टा शिष्टपूजिता ।
अप्रमेया स्वप्रकाशा मनोवाचामगोचरा ।। ८९।।

409) शिवप्रिया – वह जो भगवान शिव को प्रिय है

410) शिवपरा – वह जो भगवान शिव को छोड़कर कोई अन्य हित नहीं रखता है

411) शिष्टेष्टा – वह जो अच्छी आदतों वाले लोगों को पसंद करता है

412) शिष्टपूजिता – वह जो अच्छे लोगों द्वारा पूजा की जा रही है

413) अप्रमेया – वह जो मापा नहीं जा सकता

414) स्वप्रकाशा – वह जिसके पास अपनी चमक है

415) मनोवाचामगोचरा – वह जो मन और वचन से परे है

चिच्छक्तिश्चेतनारूपा जडशक्तिर्जडात्मिका ।

गायत्री व्याहृतिः सन्ध्या द्विजबृन्द–निषेविता ।। ६०।।

416) चिच्छक्ति – वह पवित्र ज्ञान की ताकत है

417) चेतनारूपा – वह जो कार्रवाई के पीछे की शक्ति का व्यक्तिकरण है

418) जडशक्ति – वह जो इम्मोबिल की ताकत है

419) जडामिका – वह जो इम्मोबाइल की दुनिया है

420) गायत्री – वह जो गायत्री है

421) व्याहृतिः – वह वर्णों से उत्पन्न व्याकरण कौन है

422) सन्ध्या – वह जो आत्माओं और ईश्वर का मिलन है

423) द्विजबृन्दनिषेविता – वह जो सभी प्राणियों द्वारा पूज्य है

तत्त्वासना तत्त्वमयी पञ्च–कोशान्तर–स्थिता ।

निस्सीम–महिमा नित्य–यौवना मदशालिनी ।। ६१।।

424) तत्त्वासना – वह जो सिद्धांतों पर बैठता है

425) तब – वह कौन है

426) त्वं – वह तुम कौन हो

टिप्पणी

427) अये – वह जो माँ है

428) पञ्चकोशान्तरस्थिता – वह पाँच पवित्र भागों के बीच में है

429) निस्सीममहिमा – वह जिसके पास असीम प्रसिद्धि है

430) नित्ययौवना – वह जो कभी जवान हो

431) मदशालिनी – वह जो अपने परिश्रम से चमकता है

मदघूर्णित–रक्ताक्षी मदपाटल–गण्डभूः ।
चन्दन–द्रव–दिग्धाङ्गी चाम्पेय–कुसुम–प्रिया ।। ६२।।

432) मदघूर्णितरक्ताक्षी – वह जो अपने अतिउत्साह के कारण लाल आँखें घुमाती है

433) मदपाटलगण्डभूः – जो अत्यधिक क्रिया के कारण लाल गाल रखते हैं

434) चन्दनद्रवदिग्धाङ्गी – वह जो अपने शरीर पर चंदन का लेप लगाती है

435) चाम्पेयकुसुमप्रिया – वह जो चंपक वृक्ष के फूल पसंद करता है

कुशला कोमलाकारा कुरुकुल्ला कुलेश्वरी ।
कुलकुण्डालया कौल–मार्ग–तत्पर–सेविता ।। ६३।।

436) कुशला – वह बुद्धिमान है

437) कोमलाकर – वह जो सुंदर सुंदर रूप है

438) कुरुकुल्ला – वह कुरु कुल्ला देवी के रूप में है जो विमरसा में रहती है

439) कुलेश्वरी – वह कबीले की देवी है

440) कुलकुंडलाय – वह जो कुला कुंड में रहती है या वह कुंडलनी नामक शक्ति है

441) कौलर्मात्परसेविता – वह जो कौला मठ का पालन करने वाले लोगों द्वारा पूजा की जा रही है

कुमार–गणनाथाम्बा तुष्टिः पुष्टि मर्ति धृतिः ।
शान्तिः स्वस्तिमती कान्र्ति नन्दिनी विध्ननाशिनी ।। ६४।।

442) कुमारगणनाथाम्बा – वह जो गणेश और सुब्रह्मण्य की माँ है

443) तुष्टिः – वह जो सुख का व्यक्ति है

444) पुष्टि – वह जो स्वास्थ्य की पहचान है

445) मर्ति – वह जो ज्ञान की पहचान है

446) धृतिः – वह साहस का व्यक्ति है

447) शान्तिः – वह जो शांत है

टिप्पणी

448) स्वस्तिमती – वह जो हमेशा अच्छा करती है

449) कार्न्ति – वह जो प्रकाश की पहचान है

450) नन्दिनी – वह जो कामदेव की पुत्री नादिनी की पहचान है

451) विघ्ननाशिनी – वह जो बाधाओं को दूर करती है

तेजोवती त्रिनयना लोलाक्षी–कामरूपिणी ।

मालिनी हंसिनी माता मलयाचल–वासिनी ।। ६५।।

452) तेजोवती – वह जो चमकता है

453) त्रिनयना – वह जिसकी तीन आँखें हों

454) लोलाक्षी – वह जो भटकती हुई आँखें हैं

455) मालिनी – वह जो माला पहनती है

456) हंसिनी – वह जो हंसों से घिरा हो

457) माता – वह जो माँ है

458) मलयाचलवासिनी – वह जो मलाया पहाड़ में रहती है

सुमुखी नलिनी सुभ्रूः शोभना सुरनायिका ।

कालकण्ठी कान्तिमती क्षोभिणी सूक्ष्मरूपिणी ।। ६६।।

459) सुमुखी – वह जिसके पास सुखदायक स्वभाव है

460) नलिनी – वह जिसका शरीर कमल की पंखुड़ियों की तरह कोमल और सुंदर है

461) सुभ्रूः – वह जिसकी सुंदर पलकें हों

462) शोभना – वह जो अच्छी चीजें लाता है

463) सुरनायिका – वह देवताओं का नेता है

464) कालकण्ठी – वह मृत्यु के देवता को मारने वाला कंस है

465) कान्तिमती – वह जिसके पास ईथर की चमक है

466) क्षोभिणी – वह जो उच्च भावनाएँ पैदा करता है या वह जो उत्तेजित हो जाता है

467) सूक्ष्मरूपिणी – वह जिसके पास एक माइक्रो कद है

वज्रेश्वरी वामदेवी वयोऽवस्था–विवर्जिता ।

सिद्धेश्वरी सिद्धविद्या सिद्धमाता यशस्विनी ।। ६७।।

468) वज्रेश्वरी – वह जो वज्रेश्वरी (हीरे का स्वामी) है, जो जालंधर पीठ पर विराजमान है

469) वामदेवी – वह जो वामा देवता का संघ है

470) वयोऽवस्थाविवर्जिता – वह जो उम्र के साथ नहीं बदलती

टिप्पणी

471) सिद्धेश्वरी – वह सिद्धों की देवी हैं (सुपर प्राकृतिक शक्तियों वाले संत)

472) सिद्धविद्या – वह जो पंच दशा मन्त्र की पहचान है जिसे सिद्ध विद्या कहा जाता है

473) सिद्धमाता – वह जो सिद्धों की जननी है

474) यशस्विनी – वह जो प्रसिद्ध है

विशुद्धिचक्र–निलयाऽऽरक्तवर्णा त्रिलोचना ।

खट्वाङ्गादि–प्रहरणा वदनैक–समन्विता ।। ६८।।

475) विशुद्धिचक्रनिल्य – वह जो सोलह पंखुड़ियों वाले कमल में है

476) आरक्तवर्णा – वह जो थोड़ा लाल है

477) त्रिलोचना – वह जिसके पास तीन आँखें हैं

478) खट्वाङ्गादिप्रहरणा – वह जिसके पास तलवार की तरह हथियार हैं

479) वदनैकसमन्विता – वह जिसके पास एक चेहरा है

पायसान्नप्रिया त्वक्स्था पशुलोक–भयङ्करी ।

अमृतादि–महाशक्ति–संवृता डाकिनीश्वरी ।। ६९।।

480) पायसान्नप्रिया – वह जो मीठा चावल पसंद करती है (पयसाम)

481) त्वक्स्तथा – वह जो त्वचा की संवेदनशीलता में रहता है

482) पशुलोकभयङ्करी – वह जो पुरुषों की तरह जानवर के लिए डर पैदा करता है

483) अमृतादिमहाशक्तिसंवृता – वह जो अमृता, कर्शिनी, इंद्राणी, ईसानि, उमा, उरदवा केसी जैसी महाशक्तियों से घिरा हुआ है

484) डाकिनीश्वरी – वह जो दक्षिण की देवी है (मृत्यु को दर्शाती है)

अनाहताब्ज–निलया श्यामाभा वदनद्वया ।

दंष्ट्रोज्ज्वलाऽक्ष–मालादि–धरा रुधिरसंस्थिता ।। १०० ।।

485) अनाहताब्जनिलया – वह बारह पंखुड़ियों वाले कमल में रहती है

486) श्यामाभा – वह जो हरी काली है

487) वदनद्वया – वह जिसके दो चेहरे हों

488) दंष्ट्रोज्ज्वला – वह जो लंबे–चौड़े दांतों से चमकता है

489) अक्षमालादिधरा – वह जो ध्यान श्रृंखला पहनती है

490) रुधिरसंस्थिता – वह जो खून में है

पाठगत प्रश्न– 15.1

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. ..... क्षेत्रेशी क्षेत्र–क्षेत्रज्ञ–पालिनी ।
2. विजया ..... वन्द्या वन्दारु–जन–वत्सला ।
3. चितिस्तत्पद–लक्ष्यार्था ..... ।
4. कामेश्वर–प्राणनाडी कृतज्ञा ..... ।
5. ओड्याणपीठ–निलया ..... ।
6. सद्यःप्रसादिनी ..... साक्षिवर्जिता ।
7. प्रभावती ..... प्रसिद्धा परमेश्वरी ।
8. ..... विविधाकारा विद्याविद्या–स्वरूपिणी ।
9. शिवप्रिया ..... शिष्टेष्टा शिष्टपूजिता ।
10. तत्त्वासना ..... पञ्च–कोशान्तर–स्थिता ।

आपने क्या सीखा?

- श्लोकों का शुद्ध उच्चारण करना।
- देवी ललिता के लिए प्रयोग किये गये विशेषक शब्दों का अर्थज्ञान।
- देवी ललिता की विशेषताएं।

पाठांत प्रश्न

1. नीचे दिये गये पदों के अर्थ लिखिए–

a) वन्दारु

b) प्राणनाडी

c) साक्षिवर्जिता

d) परमेश्वरी

e) विविधाकारा

f) शिष्टपूजिता

उत्तरमाला

15.1

1. क्षेत्रस्वरूपा
2. विमला
3. चिदेकरस–रूपिणी
4. कामपूजिता
5. बिन्दु–मण्डलवासिनी
6. विश्व–साक्षिणी
7. प्रभारूपा
8. व्यापिनी
9. शिवपरा
10. तत्त्वमयी